अधिगम
अंक 34 : मार्च 2025
ISSN : 2394-773X

विकसित भारत @2047 के लक्ष्य प्राप्ति में एक प्रगतिशील एवं समावेशी शिक्षा प्रणाली की अनिवार्यता

डॉ. विमलेश सिंह*

शोध–सार

विकसित भारत @2047 भारत सरकार का एक व्यापक विजन है, जिसका लक्ष्य भारत को वर्ष 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाना है अर्थात् वर्ष 2047 में जब प्रत्येक भारतवासी आजादी के 100वें वर्ष में प्रवेश करेगा तब भारत एक विकसित राष्ट्र होगा। इस विजन में आर्थिक वृद्धि, सामाजिक प्रगति, पर्यावरण स्थिरता और सुशासन सहित विकास के विभिन्न पहलू सम्मिलित किए गये हैं। विकसित भारत का उद्देश्य प्रत्येक भारतीय के जीवनस्तर में सुधार लाना है, जिससे सभी को समान अवसर एवं सुविधाएं मिल सकें। भारत को एक विकसित राष्ट्र एवं वैश्विक शक्ति बनाने के मार्ग में वर्तमान शिक्षा प्रणाली की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेगी। अतः इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए देश में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू की गई है। इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य आधुनिक अर्थव्यवस्था की मांगों के लिए कार्यबल को बेहतर ढंग से तैयार करने की दिशा में शिक्षा प्रणाली को नया रूप देना है। इस नीति का लक्ष्य विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना और अनुसंधान के लिए उचित वातावरण तैयार करना है। इस नीति में नवाचार और पर्यावरण संरक्षण के माध्यम से भारत को एक सशक्त और समृद्ध राष्ट्र बनाने का लक्ष्य रखा गया है।

* अतिथि प्रवक्ता, (अर्थशास्त्र) शासकीय महाविद्यालय, पिछोर, जिला–ग्वालियर (म.प्र.)

मुख्य बिन्दुः विकसित भारत @2047, शिक्षा प्रणाली, प्रगतिशील और समावेशी शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पर्यावरण स्थिरता और सुशासन।

प्रस्तावना

किसी भी देश की प्रगति की नींव उसकी शिक्षा प्रणाली होती है। एक मजबूत और प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्था के विकास के लिए एक सुशिक्षित आबादी का होना आवश्यक है। शिक्षा से लोगों की उत्पादकता, रचनात्मकता तथा नवाचार प्रवृत्ति बढ़ती है। इससे देश की उद्यमशीलता और तकनीकी प्रगति को बढ़ावा मिलता है। शिक्षा ही वह शस्त्र है जिससे देश में व्याप्त अशिक्षा, गरीबी एवं बेरोजगारी जैसी अनेक सामाजिक कमजोरियों को समाप्त कर आर्थिक विकास को गति प्रदान की जा सकती है। शिक्षा व्यक्ति में कौशल एवं क्षमताओं का विकास कर देश के लिए बेहतर मानव संसाधन को तैयार करने में सहायक होती है। शिक्षा व्यक्ति में संज्ञानात्मक कौशल को बढ़ाती है और समस्या–समाधान की क्षमताओं का विकास करती है। देश की अर्थव्यवस्था की उत्पादकता वहां के शिक्षित श्रमिकों के अनुपात से निकटता से जुड़ी हुई है। शिक्षित युवा वर्तमान समय में बदलते श्रम बाजारों में अधिक बेहतर कुशलता से कार्य करने में सक्षम होते हैं। शिक्षा से देश में न केवल सामाजिक गतिशीलता और आर्थिक प्रगति होती है बल्कि रोजगार के अनेक अवसर भी पैदा होते हैं। शिक्षा में उचित निवेश कर एक उच्च कुशल कार्यबल तैयार कर वर्तमान व्यवसायों की जरूरतों को बेहतर ढंग से पूरा कर विकसित राष्ट्र के लक्ष्य को शीघ्र हासिल किया जा सकता है। भारत को विकसित देश बनने के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, आर्थिक नीतियों का सुदृढ़ीकरण, सामाजिक समानता, नवाचार को बढ़ावा, और पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करना होगा। यह देश के सन्तुलित व समग्र विकास के लिए आवश्यक है।

अध्ययन का उद्देश्य

- विकसित भारत @2047 विजन अवधारणा को स्पष्ट करना।
- विकसित भारत @2047 विजन प्राप्त करने में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रणाली की अनिवार्यता का विश्लेषण करना।

- विकसित भारत @2047 विजन को प्राप्त करने में आने वाली चुनौतियों का विश्लेषण करना।

अध्ययन की प्रविधि

इस अध्ययन हेतु तथ्य द्वितीय स्रोतों के माध्यम से जैसे पुस्तकों, जर्नलों, समाचार–पत्र, शासकीय व अशासकीय स्तर पर प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं तथा विभिन्न वेबसाइटों के माध्यम से एकत्रित किए गए हैं। यह अध्ययन पूर्णतः व्याख्यात्मक एवं वर्णनात्मक है।

भारत की शिक्षा व ज्ञान का समृद्धशाली इतिहास

भारतवर्ष पुरातन काल से शिक्षा व ज्ञान का प्रमुख केंद्र रहा है। तक्षशिला, नालंदा विक्रमशिला, वल्लभी, उदंतपुरी, पुष्पगिरी, पाटलिपुत्र और शारदा पीठ अपनी पूरी गरिमा में विश्व के मनीषियों को आकर्षित करते थे। भारतीय सभ्यता तब अपने स्वर्णकालिक दौर से गुजर रही थी। उपनिषद् के ऋषि लोगों को अचंभित कर देने वाले प्रश्नों का उत्तर सहजता से दे रहे थे। भारतीय गणितज्ञ शून्य की महिमा को आत्मसात कर रहे थे तथा भारतीय खगोलविद सूर्य और उसके ग्रहों के बीच सम्बन्ध स्थापित कर रहे थे एवं उनके मध्य दूरी को माप रहे थे। भारतीय चिकित्सक आयुर्वेद को जीवन संजीविनी बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत थे। शल्यचिकित्सा जैसे अभिनव प्रयोगों को पूरी संजीदगी से अंजाम दे रहे थे। जब वैदिक ऋषि **"आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः"** की घोषणा कर चारों ओर से शिक्षा व ज्ञान को आमंत्रित कर रहे थे। तब भारत एक उन्नत सभ्यता रूपी प्रज्वलित नक्षत्र की तरह विश्व पटल पर अपनी आभा विकीर्ण कर रहा था, जिसका तेज सदियों तक विद्यमान रहा। भारतीय अर्थव्यवस्था अपने चरम पर थी। विश्व बाजारों में भारतीय वस्तुओं की मांग बहुतायत से थी। उस समय भारत सोने, चांदी, मसाले और रेशम के व्यापार का प्रमुख केंद्र था। भारत को अतीत में '**सोने की चिड़िया**' के रूप में जाना जाता था। प्राचीन भारत में इसकी उर्वरा भूमि, प्रचुर प्राकृतिक संसाधन, विश्वभर में फैले व्यापारिक मार्ग भारत को आर्थिक रूप से एक संपन्न राष्ट्र बनाते थे। यहां की संस्कृतियों में कला, विज्ञान और साहित्य की भरपूर समृद्धि थी, जो विश्व भर से विद्वानों और यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करती थी।

भारत की वर्तमान आर्थिक स्थिति

वर्तमान में भारत एक विकासशील अर्थव्यवस्था है जो विश्व में सबसे तीव्र आर्थिक विकास दर (लगभग 8.2 प्रतिशत) के साथ आगे बढ़ रही है। वर्तमान में भारत 3 ट्रिलियन डॉलर की जीडीपी के साथ विश्व की पांचवीं बड़ी इकोनॉमी बन चुका है तथा वर्ष 2027 तक इसके अमेरिका और चीन के बाद 5 ट्रिलियन डॉलर की जीडीपी के साथ विश्व की तीसरी बड़ी इकोनॉमी होने का अनुमान है। आज भी भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है जिस पर लगभग 50 प्रतिशत आबादी अपने जीवनयापन हेतु निर्भर है। उद्योग और सेवा क्षेत्र भी तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। आईटी उद्योगों ने विश्व स्तर पर भारत की पहचान बनाई है। इसके अलावा सोलर एनर्जी और नवाचार में निवेश से कृषि और उद्योगों में सुधार की संभावनाएं बढ़ी हैं। इसके बाद भी भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए केवल 7–8 प्रतिशत की वार्षिक विकास दर काफी नहीं कही जा सकती है। वित्तीय वर्ष 2023–24 में भारत की आर्थिक विकास दर 8.2 प्रतिशत की रही है एवं प्रति व्यक्ति आय लगभग 2,300 अमेरिकी डॉलर प्रतिवर्ष है। किसी भी देश को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में तभी शामिल किया जाता है जब उस देश के नागरिकों की प्रति व्यक्ति आय 13,000 अमेरिकी डॉलर प्रतिवर्ष के आस पास हो। इस दृष्टि से भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए भारतीय नागरिकों की औसत आय लगभग 8 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से बढ़ानी होगी। इसी प्रकार यदि भारत का सकल घरेलू उत्पाद भी यदि 8 प्रतिशत के आसपास प्रतिवर्ष बढ़ता है तब वर्ष 2047 तक भारत एक विकसित राष्ट्र निश्चित रूप से बन सकता है, परंतु इसके लिए भारत में आर्थिक सुधार कार्यक्रमों को और अधिक गति देनी होगी जिसमें शिक्षा व शिक्षित युवा अहम् भूमिका निभा सकते हैं। आज भारत के नागरिकों की औसत आयु केवल 29 वर्ष है जो विश्व की 10 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में सबसे कम है। यह भारत के लिए यह लाभदायक स्थिति है परंतु भारत इस स्थिति का लाभ वर्तमान में शिक्षा व कुशलता के कमी के कारण नहीं उठा पा रहा है।

विकसित भारत @2047: शिक्षा की भूमिका

'किसी भी राष्ट्र के विकास में गति उसके नागरिकों के बीच शिक्षा के प्रसार से होती है।' **स्वामी विवेकानंद** जी का यह कथन आज भी अधिक सार्थक प्रतीत होता है। 21वीं सदी में ज्ञान के विस्फोटक सैलाब से जब सारा विश्व सराबोर है, वहीं चतुर्थ औद्योगिक क्रांति की आहटें धीरे–धीरे दस्तक दे रही हैं जिसमें कृत्रिम बौद्धिकता, मशीन–लर्निंग, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और बिग डाटा जैसे उभरते क्षेत्र पूर्णतः ज्ञान आधारित है।

संविधान निर्माताओं ने लोकतांत्रिक, समतामूलक और प्रगतिशील समाज के विकास के लिए शिक्षा को आधारशिला के रूप में देखा था। उनका मानना था कि लोकतंत्र और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने तथा आर्थिक विकास को गति देने के लिए शिक्षित जनसंख्या आवश्यक है। उन्होंने शिक्षा को सामाजिक विभाजन को समाप्त करने और नागरिकों को सशक्त बनाने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में देखा। सामान्यतः विकास का तात्पर्य आर्थिक उन्नति से है किंतु समय के साथ–साथ विकास के पैमाने निरंतर बदलते रहे हैं, उनकी चर्चा का केंद्र बिंदु भी बदलता रहा है जैसे आर्थिक विकास से हरित विकास और अब सतत् विकास। एक तरफ राष्ट्रपिता **महात्मा गांधी** जिनके लिए विकास आर्थिक उन्नति के साथ–साथ नैतिक मूल्य और धार्मिकता का मेल है। वहीं दूसरी ओर अर्थशास्त्री **अमर्त्य सेन** है, जिनके लिए सही मायने में विकास मनुष्य का अपनी अंतर्निहित क्षमताओं को विकसित करने की स्वतंत्रता है। हम किसी भी तरह से विकास की बात करें, किंतु शिक्षा हमेशा उसका महत्त्वपूर्ण अंग रही है। मानव को अधिक परिपक्व, खुशहाल और समझदार बनने में शिक्षा हर युग में प्रभावी रही है। यह लोगों की उत्पादकता और रचनात्मकता को बढ़ाती है, जिससे एक क्रियाशील मानव संसाधन का निर्माण होता है जो देश को सर्वांगीण विकास की ओर अग्रसर करता है। एक आकलन के मुताबिक देश के औसत स्कूली शिक्षा में एक प्रतिशत तक की वृद्धि आर्थिक वृद्धि को 6 से 14 प्रतिशत तक बढ़ा सकती है। कोई भी राष्ट्र बिना मानव पूंजी में निवेश के निरंतर विकास नहीं कर सकता। मानव पूंजी को तैयार करने का सबसे प्रभावशाली तरीका शिक्षा ही है। वर्तमान समय में वैश्विक

प्रतिस्पर्धा में अग्रणी बनने के लिए जरूरत विश्लेषण और निर्णय लेने की क्षमता से युक्त एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित और सूचित कार्यबल की है।

प्रधानमंत्री श्री **नरेंद्र मोदी** का यह कहना सत प्रतिशत समय अनुरूप है कि '**21वीं सदी ज्ञान का युग है और इस युग में भुखमरी और गरीबों को समाप्त करने का एकमात्र तरीका ज्ञान ही है।**' विकसित भारत का लक्ष्य प्राप्त करने हेतु इस ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था का समुचित उपयोग करने की क्षमता एक सशक्त, व्यापक, प्रगतिशील और समावेशी शिक्षा व्यवस्था से ही संभव होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार सर्वसुलभता, समानता, गुणवत्ता, प्रासंगिकता और दक्षता भारतीय शिक्षा व्यवस्था के प्रमुख स्तंभ हैं जो देश को ज्ञान आधारित विकसित अर्थव्यवस्था के लिए तैयार करेगा। भारत सरकार द्वारा क्रियान्वित अनेक कार्यक्रम जैसे प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, राष्ट्रीय आविष्कार अभियान, मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया आदि देश में एक ऐसा इकोसिस्टम तैयार करेंगे जिसमें शिक्षा ही विकास की मुख्य निर्धारक होगी। एक ऐसी शिक्षा जो रोजगार में वृद्धि, वैज्ञानिक आविष्कार, नवाचार (इनोवेशन) की संस्कृति का दीप प्रज्वलित कर देश को विकास के मार्ग पर अग्रसर करेगी। भारत 145 करोड़ लोगों का देश और उसमें से 65 प्रतिशत युवा, इतनी ऊर्जा, इतनी क्षमतायुक्त युवा शक्ति इतिहास में कभी कहीं नहीं हुई। इनका श्रम, शोध एवं उद्यमशीलता का संयोग ही 21वीं सदी का वह करिश्मा है जो 2047 में न्यू डेवलप्ड इंडिया का विश्व से परिचय कराएगा।

विकसित भारत @2047 हेतु उठाए गए कदम

विकसित भारत @2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भारत सरकार अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। इसके अंतर्गत तेज विकास दर, मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, बुनियादी ढांचे का विकास, डिजिटल इंडिया, स्वच्छ भारत अभियान और आत्मनिर्भर भारत जैसे कार्यक्रमों ने आर्थिक स्थिरता और रोजगार के अवसर बढ़ाए हैं। आज शिक्षा की गुणवत्ता और पहुंच बढ़ी है। आईटी, बायोटेक्नोलॉजी और अंतरिक्ष अनुसंधान में भारत ने महत्त्वपूर्ण प्रगति की है। बड़े पैमाने पर निवेश से भारत की परिवहन, ऊर्जा और संचार प्रणालियाँ मजबूत हुई हैं। नवीकरणीय

ऊर्जा में निवेश से पर्यावरणीय स्थिरता बढ़ी है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की सक्रिय भूमिका इसे एक महत्त्वपूर्ण वैश्विक खिलाड़ी के रूप में स्थापित कर रही है।

विकसित भारत @2047 विजन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

विकसित भारत @2047 भारत सरकार का एक महत्त्वाकांक्षी विजन है जिसका लक्ष्य 2047 में स्वतंत्रता की शताब्दी तक देश को एक विकसित इकाई में बदलना है। इसमें आर्थिक समृद्धि, सामाजिक उन्नति, पर्यावरण स्थिरता और प्रभावी शासन जैसे विकास के विविध पहलू शामिल है। अतः हमें एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जो सभी भारतीयों को स्वतंत्रता की भावना दे, समावेशी विकास को बढ़ावा दे और देश को 21वीं सदी के अवसरों और चुनौतियों के लिए तैयार करें। अतः शिक्षा का प्रत्येक पहलू 2047 तक एक जीवंत और सशक्त भारत के निर्माण में किस प्रकार अपनी भूमिका निभाता है इसे निम्न बिंदुओं से समझा जा सकता है।

- **शिक्षा की गुणवत्ताः** प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक सभी स्तरों पर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार आवश्यक है। इसमें बेहतर शिक्षक प्रशिक्षण, अद्यतन पाठ्यक्रम और बेहतर बुनियादी ढाँचे का विकास शामिल है।
- **समानता और समावेशः** यह सुनिश्चित करना कि सभी बच्चों को, चाहे उनकी सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सभी की पहुँच हो। लड़कियों की शिक्षा और दिव्यांग बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।
- **कौशल विकासः** शिक्षा को रोजगार बाजार की जरूरतों के साथ जोड़ना और युवाओं को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित करना आदि।
- **व्यावसायिक शिक्षा और कौशल का विकासः** विकसित भारत का लक्ष्य औद्योगिक मांगों और नई तकनीकी प्रगति को व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ जोड़ता है। हमें उद्यमिता, हरित ऊर्जा, आईटी, स्वास्थ्य सेवा

और कृषि सहित विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने होगें। लोगों को प्रशिक्षुता और इंटर्नशिप कार्यक्रम प्रदान करने होंगे जिससे वह वास्तविक दुनिया का अनुभव प्राप्त कर सकें।

- **शिक्षा और अनुसंधान में सुधारः** शिक्षा में सुधार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए नई शिक्षा नीति 2020 लागू की गई है। इसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना और अनुसंधान के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करना है। विकसित भारत 2047 के लक्षण को प्राप्त करने के लिए शिक्षा प्रणाली में संरचनात्मक बदलाव और शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार पर ध्यान दिया जा रहा है।
- **तकनीकी और वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावाः** विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने '**मिशन इनोवेशन**' और '**स्टार्टअप इंडिया**' जैसे पहल की है जिससे तकनीकी नवाचार को प्रोत्साहन मिलेगा और भारत स्टार्टअप्स को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने में मदद मिलेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य आधुनिक अर्थव्यवस्था की मांगों के लिए कार्यबल को बेहतर ढंग से तैयार करने के लिए भारत की शिक्षा प्रणाली को नया रूप देना है। पिछली शिक्षा नीतियों के विपरीत, जो मुख्य रूप से पारंपरिक शिक्षण विधियां पर केंद्रित थीं, एनईपी 2020 अधिक गतिशील, अंतःविषय दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है जो कौशल विकास और आलोचनात्मक सोच पर केंद्रित है। यह नीति विभिन्न विषयों में इंटर्नशिप और व्यावसायिक प्रशिक्षण को शामिल कर औद्योगिक विचारधारा की तत्परता पर जोर देती है। यह नीति अध्ययन के विविध क्षेत्रों में एकीकरण को प्रोत्साहित कर अंतःविषय शिक्षा को बढ़ावा देती है। इसका उद्देश्य पारंपरिक शिक्षण की बाधाओं को तोड़ना और रचनात्मक, आलोचनात्मक सोच और वास्तविक दुनिया की समस्या को हल करना है। एन.ई.पी. 2020 का एक प्रमुख लक्ष्य बढ़ते कौशल अंतर को पटना है।

विकसित भारत @2047 लक्ष्य प्राप्ति में चुनौतियां

विकसित भारत @2047 का लक्ष्य प्राप्त करने में भारत के सम्मुख अनेक समस्याएं एवं चुनौतियां हैं जैसे –

- **जनसंख्या प्रबंधनः** हमारी विशाल जनसंख्या का देश के संसाधनों पर दबाव पड़ता है। संतुलित विकास सुनिश्चित करने के लिए सतत् जनसंख्या प्रबंधन रणनीतियां अपनाना आवश्यक है।
- **असमानता और सामाजिक न्यायः** देश की एक बड़ी समस्या सामाजिक व आर्थिक असमानता रही है। इस अंतर को दूर करने के लिए लक्षित नीतियों की आवश्यकता है जो हाशिए पर पड़े समुदाय का उत्थान कर सामाजिक न्याय को बढ़ावा दे।
- **ग्रामीण भारत का सामाजिक आर्थिक समावेशनः** ग्रामीण क्षेत्र आज भी अपर्याप्त बुनियादी ढांचे, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सीमित पहुंच और स्वास्थ्य सेवा की असमानताओं से ग्रस्त है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में संतुलित विकास प्राप्त करना आज किसी चुनौती से कम नहीं है।
- **शिक्षा सुधारः** गुणवत्तापूर्ण शिक्षा विकास की आधारशिला है। भारत को ऐसे शैक्षिक सुधारों की आवश्यकता है जो पहुंच और गुणवत्ता दोनों में वृद्धि करें। इस दिशा में व्यावसायिक प्रशिक्षण और डिजिटल साक्षरता भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण है।
- **कौशल विकास और रोजगारः** विश्व आर्थिक मंच के अनुसार, आधे से अधिक भारतीय कामगारों को भविष्य की नौकरी बाजारों की मांगों को पूरा करने के लिए पुनः कौशल की आवश्यकता होगी। विकसित भारत लक्ष्य के लिए इस कौशल अंतर को समाप्त करना एक चुनौती है।
- **बुनियादी ढांचा और कनेक्टिविटीः** हालांकि भारत ने बुनियादी ढांचे के विकास में महत्त्वपूर्ण प्रगति की है किंतु अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। परिवहन नेटवर्क का आधुनिकीकरण, विश्वसनीय बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करना जरूरी है। सड़कें, रेलवे और हाई स्पीड इंटरनेट में निवेश की आवश्यकता है।

- **नौकरशाही और भ्रष्टाचारः** प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना, लालफीताशाही को कम करना और पारदर्शिता को बढ़ावा देना चिरस्थायी चुनौतियाँ हैं। सतत प्रगति के लिए कुशल शासन महत्त्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

विकसित देश बनने की दिशा में भारत की यात्रा बहुआयामी है। यह मुख्य रूप से अपने निम्न जीवन प्रत्याशा और प्रति व्यक्ति आय के कारण HDI रैंक में पिछड़ा हुआ है, जिससे शिक्षा एवं स्वास्थ्य क्षेत्र में सरकारी व्यय को बढ़ाकर सुधारा जा सकता है। इसके लिए आर्थिक विकास, सामाजिक समावेश, पर्यावरण संरक्षण और दूरदर्शी नेतृत्व के बीच एक संतुलन की आवश्यकता है। दृढ़ संकल्प, रणनीतिक योजना और सामूहिक प्रयासों से हम अपने देश को प्रगति के एक प्रकाश स्तंभ में परिवर्तित कर सकते हैं।

भारत में शिक्षा का तात्पर्य सिर्फ ज्ञान देना नहीं है, इसका अर्थ है राष्ट्र निर्माण। यह लाखों लोगों के मस्तिष्क और आकांक्षाओं को आकार देता है, देश को आगे बढ़ाता है। आर्थिक विकास, सामाजिक सामंजस्य और लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देकर, शिक्षा भारत के राष्ट्र निर्माण के प्रयासों में एक शक्तिशाली उपकरण बनी हुई है। जबकि भारत अपनी आजादी के 100वें वर्ष की ओर बढ़ रहा है, राष्ट्र निर्माण में शिक्षा की भूमिका को कम करके नहीं आंका जा सकता। यह वह आधार है जिसके द्वारा अशिक्षा, गरीबी, अकुशलता, क्षेत्रीय असमानताएँ और लैंगिक अंतर जैसी चुनौतियों को समाप्त कर देश का उज्ज्वल विकसित भविष्य निर्मित किया जा सकता है।

संदर्भ

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार।
2. अरोड़ा, पंकज एवं शर्मा, उषा (2021). राष्ट्रीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: रचनात्मक सुधारो की ओर, शिप्रा पब्लिकेशंस, दिल्ली।

3. Sahoo, Niranjan, Marisnus Kunjur, Joseph and Lohana, Sarika R. (2024) Viksit Bharat/2027: Developed India, An assessment of India's journey from 1947 to vision for 2047, First edition, New Country Publications, New Delhi.
4. दीक्षित, हृदयनारायण (2010) भारतीय शिक्षा का स्वर्णिम अतीत, Pravakta.com/glorious-past-of-indian-hridaynarayan-dikshit/
5. 2047 तक भारत का विकास मागर्रू प्रमुख मापदंड और चुनौतियां, दिनांक 18 सितंबर 2024, nextias-com/ca/editorial&analysis&hindi/16&09&2024
6. Ideas for The Vision Viksit Bharat/2047, 11 Dec 2023 http://innovativeindia-mygov-in
7. Viksit Bharat /2047: meaning, vision, objective & registration, 03 Feb 2025 http://cleartax.in/s/viksit-bharat-2047
8. Viksit Bharat /2027, 11 Dec 2023, http://iipe-ac-in
9. Empowering youth for a developed India: viksit Bharat young leader's dialogue, 21 Nov 2024, http://pib.gov.in
10. Explain what is Viksit Bharat 2047? and what does it aim to achieve? 04 March 2024, http://www.deccanherald.com
11. Good governance: Pathway to Viksit Bharat in 2047, 25 dec 2023, http://www.newindianexpress.com
12. Viksit Bharat: A Deep Drive into India's Economic Transformation 15 August 2024, http://www.jagranjosh.com
13. https://www.nextias.com/ca/editorial-analysis-hindi/16-09-2024/indias-path-to-2047-key-parameters-and-challenges-2
14. https://www.prabhatkhabar.com/education/republic-day-special-to-make-india-well-developed-in-2047-education-system-needs-to-be-developed
15. https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/destiny-of-a-nation-is-shaped-in-its-classrooms
16. https://www.prabhasakshi.com/currentaffairs/will-india-become-a-developed-nation-by-2047